

GUIDED SANSKAR SEVA



मुंडन संस्कार विधि

Mundan (Chudakarana) Sanskar — Complete Vidhi & Mantras

शिशु के जन्म-केश का विसर्जन — शुद्धि, दीर्घायु और बुद्धि का आशीर्वाद

यह मार्गदर्शिका संस्कार का हर चरण — संकल्प, मंत्र, प्रथम केश-कर्तन, स्नान, आरती और आशीर्वाद समारोह — पूर्ण विधि-विधान सहित सरल एवं व्यवस्थित क्रम में बताती है।

1. संस्कार का उद्देश्य एवं महत्व

मुंडन संस्कार — जिसे चूड़ाकरण या चौलकर्म भी कहते हैं — हिंदू षोडश संस्कारों में से एक महत्वपूर्ण संस्कार है। शिशु के जन्म के समय के केश (जो गर्भ से लाए जाते हैं) को पवित्र विधि से हटाना ही मुंडन है।

शास्त्रों के अनुसार जन्म-केश में पूर्व जन्म के कर्मों के अवशेष रहते हैं। इन्हें हटाने से शिशु की बुद्धि तीव्र होती है, इंद्रियाँ सुदृढ़ होती हैं, आयुष्य बढ़ता है और जीवन में सुख-समृद्धि आती है। शिखा (चोटी) रखना मस्तिष्क की ऊर्जा के केंद्र की रक्षा करता है।

महत्वपूर्ण: मुंडन संस्कार में पिता शुभ धातु (सोना/चाँदी) से प्रथम तीन कर्तन करते हैं। उसके बाद नाई (नाऊ) वास्तविक मुंडन पूर्ण करते हैं। शिखा (चोटी) अनिवार्यतः छोड़ी जाती है।

2. संस्कार का समय एवं स्थान

विषय	मार्गदर्शन
आयु	सामान्यतः 1, 3, 5 या 7 वर्ष में — विषम वर्षों में शुभ। कुछ परिवार पहले वर्ष के अंत में करते हैं।
शुभ माह	मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ — इन महीनों में विशेष शुभ।
शुभ तिथि	द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी।
वर्जित वार	मंगलवार, शनिवार — अधिकतर परिवारों में वर्जित।
तीर्थ स्थान	गंगा, यमुना, नर्मदा तट या पवित्र मंदिर में मुंडन विशेष फलदायी। घर पर भी हो सकता है।
अमेरिका में	घर पर, मंदिर में या निकटतम नदी/झील के पास — ज्योतिषी से मुहूर्त लें।

3. पूजा से पहले तैयारी

विषय	तैयारी
शिशु	बच्चे को पहले स्नान कराएं। स्वच्छ नए वस्त्र पहनाएं। पूजा से पहले खाना खिला दें।
माता-पिता	दोनों स्नान करके स्वच्छ वस्त्र। पिता धोती/कुर्ता।
नाई (नाऊ)	परिचित नाई को पहले से बुलाएं। उनके लिए नए उपकरण (नई छुरी/ब्लेड) लाएं।
केश संग्रह	एक छोटा कपड़ा या थाली तैयार रखें जिसमें कटे बाल एकत्र हों। बाद में नदी/तुलसी में अर्पित करें।
पूजा स्थान	पूजा चौकी। बच्चे के बैठने के लिए साफ आसन। माँ की गोद में या पिता के साथ बच्चा।

4. पूजा सामग्री सूची

- गणेश प्रतिमा/चित्र
- कलश (जल भरा)
- पीला/लाल कपड़ा (चौकी)
- अक्षत (कच्चे चावल)
- रोली / कुमकुम
- हल्दी / चंदन
- पंचामृत सामग्री
- नारियल
- आम के पत्ते
- पुष्प (लाल/पीले)
- तुलसी पत्ते
- मौली धागा
- सोने/चाँदी की छोटी कैंची या चम्मच (प्रथम कर्तन हेतु)
- नाई के लिए नई छुरी/ब्लेड
- दर्पण (शीशा)
- बाल एकत्र करने का कपड़ा/थाली
- हल्दी का पेस्ट (मुंडन के बाद सिर पर)
- सरसों का तेल / नारियल तेल
- दीपक + देसी घी
- धूप / अगरबत्ती
- कर्पूर
- फल एवं मिठाई
- आरती थाल
- गंगाजल

5. संस्कार क्रम — संक्षिप्त विवरण

क्र.	चरण	विवरण
1	पुण्याहवाचन	गंगाजल से शुद्धि और पवित्र अवसर की घोषणा।
2	गणेश पूजन	विघ्ननाशक गणेश की पूजा — शुभारंभ।
3	मातृका एवं नवग्रह पूजन	शिशु की रक्षक मातृका देवियों और नवग्रहों की शांति।
4	कलश स्थापना	जल-कलश में वरुण देव का आह्वान।
5	संकल्प	पिता हाथ में जल-पुष्प लेकर मुंडन संस्कार का संकल्प।
6	शिशु-स्थापना	बच्चे को माँ की गोद में या पिता की गोद में बिठाएं। मस्तक पर तिलक।
7	प्रथम कर्तन — पिता द्वारा	पिता सोने/चाँदी की छोटी कैंची से तीन बार (दाएं, बाएं, पीछे) प्रथम कर्तन करें।
8	नाई द्वारा मुंडन	नाई पूर्ण मुंडन करते हैं। शिखा (चोटी) छोड़ी जाती है।
9	शिखा स्थापना	शिखा मंत्र बोलते हुए चोटी की रक्षा का संकल्प लें।
10	केश-विसर्जन	कटे बाल एकत्र करके नदी/तुलसी/मंदिर में अर्पित।
11	मस्तक स्नान	बच्चे का सिर गंगाजल से धोएं। फिर पूर्ण स्नान।
12	मस्तक अनुलेपन	हल्दी/चंदन/घी से मुंडित सिर पर लेप।
13	आरती	शिशु की आरती — परिवार मिलकर।
14	आशीर्वाद समारोह	परिवार और अतिथि शिशु को आशीर्वाद दें, उपहार दें।

6. विस्तृत विधि

6.1 पुण्याहवाचन

ॐ पुण्याहं, पुण्याहं, पुण्याहम्।

भवन्तो ब्रुवन्तु — पुण्याहम्। स्वस्तिः।

Om Punyaham, Punyaham, Punyaham.

May all declare this moment as auspicious. Svasti.

6.2 गणेश पूजन

ॐ गं गणपतये नमः। वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

Om Gam Ganapataye Namah. Vakratunda Mahakaya Suryakoti Samaprabha.

Nirvighnam Kuru Me Deva Sarvakaryeshu Sarvada.

6.3 संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः।

अहं (पिता का नाम) गोत्र (गोत्र का नाम)

मम पुत्रस्य/पुत्र्याः (शिशु का नाम)

आयुर्वर्धनार्थ, बुद्धिवर्धनार्थ, शुद्ध्यर्थ च

श्री गणेश-मातृका-नवग्रह प्रीत्यर्थ

चूड़ाकरण (मुंडन) संस्कारं अहं करिष्ये।

I, (father's name), of (gotra) gotra, perform this Mundan Sanskar for my son/daughter (child's name), for the increase of life, wisdom and purity.

7. प्रथम कर्तन — पिता द्वारा

यह मुंडन संस्कार का सबसे पवित्र क्षण है। पिता सोने या चाँदी की छोटी कैंची लेकर शिशु के सिर पर तीन स्थानों पर (दाहिना, बायाँ, पीछे) मंत्र बोलते हुए थोड़े-थोड़े बाल काटें।

7.1 प्रथम कर्तन मंत्र (दाहिनी ओर)

ॐ शिवौ ते स्तां व्रीहियवावबलासावदोमधौ।

एतौ यक्षं नाशयतः पुनरायुर्ददातश्च॥

Om Shivau Te Stam Vrihiyavav Abalasavadodhau.

May these two (blades/scissors) destroy disease and restore life again.

पहला कर्तन: दाहिनी ओर से — दाहिना कान = शुभ, ज्ञान का प्रतीक।

7.2 द्वितीय एवं तृतीय कर्तन मंत्र

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।

स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥

Bhadram Karnebhih Shrunuyama Devah Bhadram Pashyemakshabhiryajtrah.

Sthirairangais Tushtuvamsastanubhirvyashema Devahitam Yadayuh.

अर्थ: हे देव, हम कानों से शुभ सुनें, आँखों से शुभ देखें, मजबूत अंगों से जीवन जियें। — ऋग्वेद

परंपरा: पिता तीन बार क्रमशः दाहिनी ओर, बाईं ओर और पीछे की ओर से थोड़े-थोड़े बाल काटें। कटे बाल थाली में एकत्र करें। उसके बाद नाई जी पूर्ण मुंडन करते हैं।

8. शिखा स्थापना मंत्र

मुंडन के दौरान नाई को पहले ही निर्देश दे दें कि सिर के मध्य-ऊपरी भाग पर एक छोटी चोटी (शिखा) छोड़ें। शिखा स्थापना करते समय मंत्र:

ॐ शिखायै वषट्।

सहस्रशीर्षं ब्रह्म सहस्राक्षं सहस्रपात्।

शिखे रक्ष रक्ष — ब्रह्मतेजो धारय॥

Om Shikhayai Vashat.

O Shikha, protect, protect — sustain the divine power of Brahma.

अर्थ: शिखा मस्तिष्क की सुषुम्ना नाड़ी के केंद्र की रक्षा करती है। यह बुद्धि, स्मरण और आध्यात्मिक शक्ति का आधार है।

9. मस्तक स्नान मंत्र

मुंडन पूर्ण होने के बाद गंगाजल से शिशु का सिर धोएं। फिर पूर्ण स्नान कराएं।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः। ता न ऊर्जे दधातन।

महे रणाय चक्षसे॥

यो वः शिवतमो रसः तस्य भाजयतेह नः।

उशतीरिव मातरः॥

Om Apo Hi Shtha Mayobhuvah. Ta Na Urje Dadhatan.

Mahe Ranaya Chakshase.

Yo Vah Shivatamora Rasah Tasya Bhajayateha Nah.

अर्थ: हे जल माता, हमें शक्ति दो। जैसे माताएं अपने बच्चों को पोषित करती हैं — यह जल शिशु को शुद्ध और पवित्र करे। — ऋग्वेद

10. मस्तक अनुलेपन

मुंडित सिर पर हल्दी का पेस्ट, चंदन और थोड़ा घी लगाएं। यह शीतलता, शुद्धि और शुभता का प्रतीक है।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।

शं योरभि स्रवन्तु नः॥

हल्दी-चंदन-घी से मस्तक पर लेप करते हुए —

ॐ आयुष्मान् भव। तेजस्वी भव। मेधावी भव॥

May the divine waters be auspicious for our protection and drinking.

May they flow for our well-being. May you be long-lived, radiant and wise.

हल्दी = शुद्धि और रोग-निरोधक। चंदन = शीतलता और शांति। घी = पोषण और आयुष्य।

11. केश विसर्जन

कटे हुए बाल एक सफेद कपड़े में बाँधकर पवित्र नदी में प्रवाहित करें, तुलसी के पास भूमि में दबाएं, या मंदिर (जैसे तिरुपति) में अर्पित करें। कूड़ेदान में कभी न फेंकें।

ॐ इमान् केशान् विसर्जयामि। गंगाय नमः।

जन्म-केशा विसर्जिताः — पूर्वजन्म कर्म-क्षयाय।

नव जीवन शुभं भवतु। ॐ शान्तिः॥

I offer these birth-hairs to the sacred waters. May the karma of past lives be dissolved. May this new life be auspicious.

12. आयुष्य मंत्र

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

आयुष्मान् भव। शतायुर्भव। चिरंजीवी भव।

मेधावी भव। बलवान् भव। श्रेष्ठ भव॥

May you live a hundred years. May you be eternally joyful, wise, strong and great.

यह मंत्र परिवार के प्रत्येक सदस्य शिशु के मस्तक पर पुष्प और अक्षत डालते हुए बोलें।

13. नाई (नाऊ) सम्मान मंत्र

मुंडन पूर्ण होने के बाद नाई जी को नए वस्त्र, दक्षिणा और सम्मान अर्पित करें। वे इस पवित्र संस्कार के महत्वपूर्ण भाग हैं।

ॐ त्वष्टे नमः। त्वष्टा यः सर्वरूपाणि वेत्ति।

कर्मकाण्डे सहायकाय नमः। दक्षिणां समर्पयामि॥

परंपरा: नाई को श्रेष्ठ दक्षिणा, नए वस्त्र और यथाशक्ति उपहार दें। यह उनके कार्य का सम्मान है।

14. शिशु की आरती

आरती करें प्यारे बच्चे की, आरती करें प्यारे बच्चे की।

मुंडन हुआ आज इनका, सुंदर नव जीवन की॥ (टेक)

जन्म-केश विसर्जित हुए, शुद्धि मिली नई।

गणेश माता का आशीर्वाद, बुद्धि बढ़ी सदाई॥ (आरती...)

शिखा रही है मस्तक पर, ब्रह्म-तेज का धाम।

माँ-बाप की आँखों की ज्योति, कुल का है यह नाम॥ (आरती...)

सौ साल लिए यह बच्चा, स्वस्थ और बलवान।

विद्या-धर्म-कर्म पथ पर, हो ईश का ध्यान॥ (आरती...)

आरती करें प्यारे बच्चे की, आरती करें प्यारे बच्चे की।

मुंडन हुआ आज इनका, सुंदर नव जीवन की॥

15. क्षमा प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।

पूजाविधिं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।

यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥

O Lord, forgive all errors in ritual or devotion. May this Sanksar be complete by your grace.

16. संस्कार में भूमिकाएँ

भूमिका	करने वाले	कार्य
पिता (मुख्य यजमान)	बच्चे के पिता	संकल्प, सोने/चाँदी से प्रथम तीन कर्तन, केश-विसर्जन, मस्तक अनुलेपन।
माता	बच्चे की माँ	शिशु को गोद में रखना, स्नान कराना, हल्दी-चंदन लेप, शिशु को शांत रखना।
नाई (नाऊ)	परिचित नाई	पिता के प्रथम कर्तन के बाद पूर्ण मुंडन, शिखा छोड़ना।
मंत्र-पाठ	स्वयं परिवार अथवा पुजारी	जो भी उपस्थित होकर मंत्रोच्चारण करें।
दादा	पिता के पिता	शिशु को आशीर्वाद, पुष्पांजलि में नेतृत्व, प्रथम आशीर्वाद।
दादी / नानी	माँ/बाप की माता	शिशु की आरती, हल्दी-तेल की थाली, उपहार।
परिवार	सभी उपस्थित	सभी मंत्रों में साथ बोलना, "भवतु" स्वीकृति, आरती, पुष्पांजलि, आशीर्वाद।

17. यजमान विशेष निर्देश

- नाई को पहले से बुलाएं — उन्हें संस्कार की तिथि और समय पहले बताएं।
- नाई के लिए नई ब्लेड/उपकरण लाएं — पुराने उपकरण से मुंडन न हो।
- सोने/चाँदी की कैंची पहले से तैयार रखें — यह पिता के प्रथम कर्तन हेतु।
- शिशु को पूजा से पहले खाना खिला दें — भूखे शिशु का मुंडन कठिन होता है।
- शिशु को बहलाने के लिए पसंदीदा खिलौना पास रखें।
- कटे बाल थाली में एकत्र करें — कूड़े में न फेंकें। बाद में पवित्र स्थान पर अर्पित करें।
- मुंडन के बाद हल्दी का गाढ़ा पेस्ट सिर पर लगाएं — त्वचा की रक्षा होती है।
- नाई जी को यथाशक्ति दक्षिणा और नए वस्त्र जरूर दें — यह परंपरा का हिस्सा है।
- मुंडन के दिन शिशु को धूप और ठंडी हवा से बचाएं — सिर संवेदनशील रहता है।

18. संकल्प पत्र

विवरण	भरें
पिता का नाम	
माता का नाम	

विवरण	भरें
गोत्र	
शिशु का नाम	
शिशु का लिंग	
शिशु की आयु (वर्ष)	
जन्म तिथि	
केश विसर्जन का स्थान	
संस्कार की तिथि एवं स्थान	

मुंडन संस्कार विधि | Mundan Sanskar Vidhi | Version 1.0 | Dharma Path USA Foundation

षोडश संस्कारों में चूड़ाकरण — शिशु की शुद्धि, बुद्धि और दीर्घायु हेतु।